07 / 02 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सम्पूर्णताकी निशानी संतुष्टता का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा सूक्ष्म वतन में स्थित हूँ..

➳_ ➳ फ़रिश्ता स्वरुप की चमकीली ड्रेस धारण किये हुए हूँ..

➳_ ➳ दिव्य फ़रिश्ता बाबा मेरे सामने खड़े हैं...

➳_ ➳ बापदादा की शक्तिशाली किरणों से मेरा संपन्न और सम्पूर्ण स्वरुप निखरता जा रहा है...

→ बाबा मुझे संतुष्ट मणि भव का वरदान दे रहे हैं..

→ मैं संपन्न और सम्पूर्ण फ़रिश्ता हूँ..

→ संतुष्टमणि हूँ...

- सभी सब्जेक्ट में मैं स्वयं से संतुष्ट हूँ..
- सर्व आत्माएं मुझ से संतुष्टता का अनुभव कर रही हैं..

▸ सर्व की संतुष्टता के आशीर्वाद, सूक्ष्म स्नेह व सहयोग से मैं सम्पूर्णता के समीप जाती जा रही हूँ..

▸ इस सम्पूर्णता की स्थिति के साथ सर्व की संतुष्टता भी बढती जा रही है...

➢➢ सर्व को संतुष्ट करने का साधन

➳_ ➳ मैं आत्मा समय और परिस्थिति के अनुसार स्वयम को मोल्ड करती जा रही हूँ...

➳_ ➳ अपने किसी भी स्वभाव संस्कार के वशीभूत नहीं हो रही हूँ..

➳_ ➳ स्थूल में जैसा समय वैसा रूप, जैसा देश वैसा वेश करना सहज होता है... उसी प्रकार मैं अपने स्वभाव संस्कार को भी समय अनुसार सहज जी परिवर्तन कर रही हूँ...

→ सख्त चीज मोल्ड नहीं होती... इसलिए मैं अपने संस्कारों को इजी बनाती जा रही हूँ...

→ अभी का कोई संस्कार मेरा नहीं है...

→ आत्मा के आदि और अनादि संस्कार ही मेरे हैं...

- मैं नोलेज्फुल आत्मा हूँ...
- मैं ब्लिसफुल आत्मा हूँ...
- मैं पावरफुल आत्मा हूँ...
- मैं आत्मा उंच से उंच स्टेज पर पार्टधारी बन पार्ट बजा रही हूँ...
- मैं सर्व शक्तिमान के वरसे की अधिकारी आत्मा हूँ..

▸ मैं समय अनुसार स्वभाव संस्कारों को मोल्ड कर रियल गोल्ड बन रही हूँ...

➢➢ मैं अंगद समान अचल अडोल आत्मा हूँ...

➳_ ➳ कोई भी परिस्थिति मेरे निश्चय के आसन को हिला नहीं सकती...

→ मैं अचल आत्मा हर संकल्प, बोल और कर्म में सदा विजयी बन रही हूँ...

■ चारों ही बातों में मेरा निश्चय का फ़ौंडेशन मजबूत बन गया है...

▶ बाप जो है, जैसा है... उसे वैसा ही मान और जान रही हूँ...

▶ बाप के ज्ञान को अनुभव द्वारा स्पष्ट जान व मान रही हूँ...

▶ अपने श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन के महत्व को जान कर उसी प्रमाण चल रही हूँ...

▶ वर्तमान के चढ़ती कला के महत्व को जान कर उसी प्रमाण हर कदम उठा रही हूँ...

➢➢ मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ...

➳_ ➳ मैं आधार मूर्त आत्मा हूँ..

→ किसी भी बात में संकल्प में भी हलचल में नहीं आती हूँ...

→ मैं निश्चय बुद्धि विजयंती का अनुभव कर रही हूँ..

■ मैं कल्याणकारी बाप की श्रीमत पर चलने वाली कल्याणकारी आतमा हूँ...

■ मैं सर्व शक्तिमान बाप की साथी आत्मा हूँ..

■ स्थापना के कार्य के निमित्त हूँ...

■ बापदादा की मददगार आत्मा हूँ...

▶ मैं आत्मा दृढ संकल्प की तीली से सर्व कमजोरियों को स्वाहा कर रही हूँ...